सीआईएमपी और यूनिसेफ द्वारा किया गया विकसित डीआरआर ई-कोर्स लांच

पटना (आससे)। चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआईएमपी) में आयोजित कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉक्टर उदय कांत मिश्रा द्वारा 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फ़ॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया। लॉन्च समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर मिश्रा के अलावा सम्मानित अतिथि प्रोफेसर शरद कुमार यादव, कुलपति, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, मार्ग्रेट ग्वाडा, प्रमुख, यूनिसेफ बिहार, डॉ. राणा सिंह, निदेशक, सीआईएमपी, कुमोद कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सीआईएमपी एवं डॉ. सिबानंद सेनापति, सीआईएमपी उपस्थित रहे। यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फ़ॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआईएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है। सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का क्षमतावर्धन करना है ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके। यूनिसेफ बिहार के कार्यक्रम विशेषज्ञ (रिस्क एंड रेजिलिएंस) राजीव कुमार ने पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए आठ मॉड्यूलों के बारे में बताया। उन्होंने आगे बताया कि इसके व्यापक उपयोग को ध्यान में रखते हुए, कोर्स को लोक सुलभ रखा गया है। कोई भी किशोर-किशोरी, युवा या आम नागरिक इसे नि:शुल्क कर सकते हैं। अपने मुख्य संबोधन में बीएसडीएमए के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा ने आपदा के विभिन्न पहलुओं को छुआ और यह भी बताया कि युवा कैसे आपदाओं को कम करने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

उन्होंने युवाओं के अंदर तकनीकी दक्षता, विविधता व समावेशिता, पर्यावरणीय चेतना, उद्यमशीलता की भावना और सामाजिक जागरूकता जैसे कौशल की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि वे आपदा प्रबंधन से जुड़ी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं। बिहार की प्रमुख मार्ग्रेट ग्वाडा ने अपने संबोधन में कहा कि बिहार में सभी प्रकार की आपदाएँ लगभग हर साल होती हैं।

Aaj ! Page No - 08 ! Date - 19-03-2024 !

CIMP व यूनिसेफ ने विकसित डीआरआर ई-कोर्स लांच किया

जाम का नहीं करना पड़ेगा सामना, लाखों लोगों को मिली होना अभी बाकी

patna@inext.co.in

PATNA (18 March): चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआइएमपी) में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डा. उदय कांत मिश्रा ने 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फार एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया. यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फार क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वाटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वाश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है.

इस सेंटर को सीआइएमपी सेंटर फार सीएसआर एंड़ ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआइएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है. सीआइएमपी के निदेशक डा. राणा सिंह ने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का क्षमता वर्धन करना है, ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके. समारोह में एकेयू के कुलपति प्रो. शरद कुमार यादव, यूनिसेफ बिहार प्रमुख मार्ग्रेट ग्वाडा, सीआइएमपी के प्रशासनिक अधिकारी कुमोद कुमार और डा. सिबानंद सेनापति मौजूद रहे.

I Next ! Page No - 04 ! Date - 19-03-2024 !

सीआईएमपी और यूनिसेफ ने डीआरआर ई-कोर्स लॉन्च किया

पटना: आज चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना में आयोजित कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के उपाध्यक्ष डॉक्टर उदय कांत मिश्रा द्वारा 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फ़ॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया। लॉन्च समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर मिश्रा के अलावा सम्मानित अतिथि प्रोफेसर शरद कुमार यादव, कुलपति, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, मार्ग्रेट ग्वाडा, प्रमुख, यूनिसेफ बिहार, डॉ. राणा सिंह, निदेशक, सीआईएमपी, कुमोद कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सीआईएमपी एवं डॉ. सिबानंद सेनापति, सीआईएमपी उपस्थित रहे। यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फ़ॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन

(सीआईएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है। सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का क्षमतावर्धन करना है ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके।यूनिसेफ बिहार के कार्यक्रम विशेषज्ञ (रिस्क एंड रेजिलिएंस) श्री राजीव कुमार ने पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए आठ मॉड्यूलों के बारे में बताया। उन्होंने आगे बताया कि इसके व्यापक उपयोग को ध्यान में रखते हुए, कोर्स को लोक सुलभ रखा गया है। कोई भी किशोर-किशोरी, युवा या आम नागरिक इसे निःशुल्क कर सकते हैं।

अपने मुख्य संबोधन में बीएसडीएमए के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा ने आपदा के विभिन्न पहलुओं को छुआ और यह भी बताया कि युवा कैसे आपदाओं को कम करने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने युवाओं के अंदर तकनीकी दक्षता, विविधता व समावेशिता, पर्यावरणीय चेतना, उद्यमशीलता की भावना और सामाजिक जागरूकता जैसे कौशल की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि वे आपदा प्रबंधन से जुड़ी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं।

इस संदर्भ में उन्होंने प्रमुख जिम्मेदारियों जैसे तैयारी, जागरूकता और शिक्षा, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, सहयोग और नेटवर्किंग, वंचितसमूहों का सशक्तिकरण, पर्यावरणीय प्रबंधन, स्वयंसेवा, सामुदायिक सहभागिता, एडवोकेसी के ज़रिए नीतियों को प्रभावित करना, आदि की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस तथ्य को भी रेखांकित किया कि राज्य सरकार के ÷जल-जीवन-हरियाली÷ मिशन ने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया और बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को संयुक्त राष्ट्र के ÷जलवायु महत्वाकांक्षा गोलमेज सम्मेलन÷ को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अंत में कहा कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और सरकार के निर्णयों को किशोर-किशोरियों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी एवं समर्थन मिलने से आपदा जोखिम न्यूनीकरण सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

सीआईएमपी और यूनिसेफ द्वारा संयुक्त रूप से विकसित डीआरआर ई-कोर्स लॉन्च किया गया

राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं नीतिगत फ़ैसलों के साथ-साथ किशोर-किशोरियों व युवाओं की सक्रिय भागीदारी से आपदा जोखिम न्यूनीकरण होगा सुनिश्चितः बीएसडीएमए उपाध्यक्ष

संवाददाता । **एजुकेशनल न्यूज**

पटना, 18 मार्चः आज चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआईएमपी) में आयोजित कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉक्टर उदय कांत मिश्रा द्वारा 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फ़ॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया। लॉन्च समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर मिश्रा के अलावा सम्मानित अतिथि प्रोफेसर शरद कुमार यादव, माननीय कुलपति, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, सुश्री मार्ग्रेट ग्वाडा, प्रमुख, यूनिसेफ बिहार, डॉ. राणा सिंह, निदेशक, सीआईएमपी, श्री कुमोद कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सीआईएमपी एवं डॉ. सिबानंद सेनापति, सीआईएमपी उपस्थित रहे।

यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फ़ॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआईएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है।

सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का

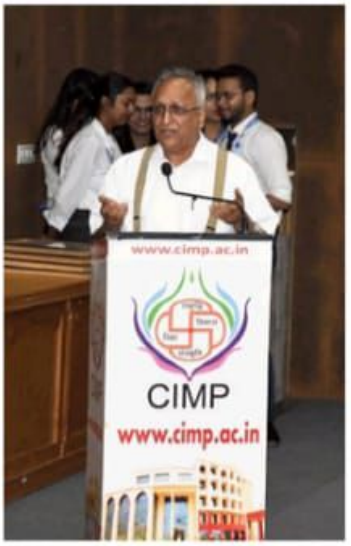

क्षमतावर्धन करना है ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके।

यूनिसेफ बिहार के कार्यक्रम विशेषज्ञ (रिस्क एंड रेजिलिएंस) श्री राजीव कुमार ने पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए आठ मॉड्यूलों के बारे में बताया। उन्होंने आगे बताया कि इसके व्यापक उपयोग को ध्यान में रखते हुए, कोर्स को लोक सुलभ रखा गया है। कोई भी किशोर-किशोरी, युवा या आम नागरिक इसे निःशुल्क कर सकते हैं।

अपने मुख्य संबोधन में बीएसडीएमए के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा ने आपदा के विभिन्न पहलुओं को छुआ और यह भी बताया कि युवा कैसे आपदाओं को कम करने में प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं। उन्होंने युवाओं के अंदर तकनीकी दक्षता, विविधता व समावेशिता, पर्यावरणीय चेतना, उद्यमशीलता की भावना और सामाजिक जागरूकता जैसे कौशल की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि वे आपदा प्रबंधन से जुड़ी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं।

इस संदर्भ में उन्होंने प्रमुख जिम्मेदारियों जैसे तैयारी, जागरूकता और शिक्षा, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, सहयोग और नेटवर्किंग, वंचितसमूहों का सशक्तिकरण, पर्यावरणीय प्रबंधन, स्वयंसेवा, सामुदायिक सहभागिता, एडवोकेसी के ज़रिए नीतियों को प्रभावित करना, आदि की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस तथ्य को भी रेखांकित किया कि राज्य सरकार के "जल-जीवन-हरियाली" मिशन ने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया और बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को संयुक्त राष्ट्र के "जलवायु महत्वाकांक्षा गोलमेज सम्मेलन" को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अंत में कहा कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और सरकार के निर्णयों को किशोर-किशोरियों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी एवं समर्थन मिलने से आपदा जोखिम न्यूनीकरण सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

यूनिसेफ बिहार की प्रमुख सुश्री मार्ग्रेट ग्वाडा ने अपने संबोधन में कहा कि बिहार में सभी प्रकार की आपदाएँ लगभग हर साल होती हैं। साथ ही, अन्य आयु समूहों की तुलना में बच्चों एवं युवाओं पर जलवायु परिवर्तन का सबसे प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसे देखते हुए उन्होंने सभी हितधारकों से मिलकर काम करने का आह्वान किया ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जा सके। ई-कोर्स की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इससे किशोर-किशोरियों और युवाओं को राज्य में आपदा और जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के बारे में अपनी समझ बढ़ाने में मदद मिलेगी। अद्यतन सूचनाओं से लैस किशोर-किशोरी और युवाओं की फ़ौज जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन से जुड़े मुद्दों पर चेंज मेकर्स के रूप में राज्य भर में जागरूकता फैलाने का कार्य करेगी।

आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर शरद कुमार यादव ने युवाओं से आग्रह किया कि वे पूरी गंभीरता से इस पाठ्यक्रम को पूरा करें। इससे उन्हें जोखिम का सही आकलन करने के अलावा लचीलापन विकसित करने और समुदाय को संगठित करने के बारे में सीखने को मिलेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि एकेयू भविष्य में इस तरह के पाठ्यक्रमों में सीआईएमपी के साथ सहयोग करेगा।

कार्यक्रम के दौरान सीआईएमपी के छात्र, संकाय सदस्य व अधिकारीगण, बीएसडीएमए के अधिकारीगण और मीडियाकर्मी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। डॉ. सिबानंद सेनापति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सीआईएमपी और यूनिसेफ द्वारा संयुक्त रूप से विकसित डीआरआर ई-कोर्स लॉन्च किया गया

राजनीतिक इच्छाशक्ति एवं नीतिगत फैसलों के साथ-साथ किशोर-किशोरियों व युवाओं की सक्रिय भागीदारी से आपदा जोखिम न्यूनीकरण होगा सुनिश्चितः बीएसडीएमए उपाध्यक्ष

पटना, 18 मार्चः आज चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआईएमपी) में आयोजित कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉक्टर उदय कांत मिश्रा द्वारा ह्यडिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथह्ल नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया। लॉन्च समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर मिश्रा के अलावा सम्मानित अतिथि प्रोफेसर शरद कुमार यादव, माननीय कुलपति, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय, पटना, सुश्री मार्ग्रेट ग्वाडा, प्रमुख, यूनिसेफ बिहार, डॉ. राणा सिंह, निदेशक, सीआईएमपी, श्री कुमोद कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सीआईएमपी एवं डॉ. सिबानंद सेनापति, सीआईएमपी उपस्थित रहे।

यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआईएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है।

सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का क्षमतावर्धन करना है ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके।

यूनिसेफ बिहार के कार्यक्रम विशेषज्ञ (रिस्क एंड रेजिलिएंस) श्री राजीव कुमार ने पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए आठ मॉड्यूलों के बारे में बताया। उन्होंने आगे बताया कि इसके व्यापक उपयोग को ध्यान में रखते हुए, कोर्स को लोक सुलभ रखा गया है। कोई भी किशोर-किशोरी, युवा या आम नागरिक इसे निःशुल्क कर सकते हैं।

अपने मुख्य संबोधन में बीएसडीएमए के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा ने आपदा के विभिन्न पहलुओं को छुआ और यह भी बताया कि युवा कैसे आपदाओं को कम करने में प्रभावी भूमिका

निभा सकते हैं। उन्होंने युवाओं के अंदर तकनीकी दक्षता, विविधता व समावेशिता, पर्यावरणीय चेतना, उद्यमशीलता की भावना और सामाजिक जागरूकता जैसे कौशल की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की कि वे आपदा प्रबंधन से जुड़ी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं।

इस संदर्भ में उन्होंने प्रमुख जिम्मेदारियों जैसे तैयारी, जागरूकता और शिक्षा, प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण, सहयोग और नेटवर्किंग, वंचितसमूहों का सशक्तिकरण, पर्यावरणीय प्रबंधन, स्वयंसेवा, सामुदायिक सहभागिता, एडवोकेसी के जरिए नीतियों को प्रभावित करना, आदि की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने इस तथ्य को भी रेखांकित किया कि राज्य सरकार के ₹जल-जीवन-हरियाली₹ मिशन ने दुनिया भर का ध्यान आकर्षित किया और बिहार के माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार को संयुक्त राष्ट्र के ₹जलवायु महत्वाकांक्षा गोलमेज सम्मेलन₹ को संबोधित करने के लिए आमंत्रित किया गया था। उन्होंने अंत में कहा कि राजनीतिक इच्छाशक्ति और सरकार के निर्णयों को किशोर-किशोरियों और युवाओं की सक्रिय भागीदारी एवं समर्थन मिलने से आपदा जोखिम न्यूनीकरण सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी।

यूनिसेफ बिहार की प्रमुख सुश्री मार्ग्रेट ग्वाडा ने अपने संबोधन में कहा कि बिहार में सभी प्रकार की आपदाएँ लगभग हर साल होती हैं। साथ ही, अन्य आयु समूहों की तुलना में बच्चों एवं युवाओं पर जलवायु परिवर्तन का सबसे प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। इसे देखते हुए उन्होंने सभी हितधारकों से मिलकर काम करने का आह्वान किया ताकि जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम किया जा सके। ई-कोर्स की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि इससे किशोर-किशोरियों और युवाओं को राज्य में आपदा और जलवायु परिवर्तन से संबंधित मुद्दों के बारे में अपनी समझ बढ़ाने में मदद मिलेगी। अद्यतन सूचनाओं से लैस किशोर-किशोरी और युवाओं की फौज जलवायु परिवर्तन एवं आपदा प्रबंधन से जुड़े मुद्दों पर चेंज मेकर्स के रूप में राज्य भर में जागरूकता फैलाने का कार्य करेगी।

आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रोफेसर शरद कुमार यादव ने युवाओं से आग्रह किया कि वे पूरी गंभीरता से इस पाठ्यक्रम को पूरा करें। इससे उन्हें जोखिम का सही आकलन करने के अलावा लचीलापन विकसित करने और समुदाय को संगठित करने के बारे में सीखने को मिलेगा। उन्होंने उम्मीद जताई कि एकेयू भविष्य में इस तरह के पाठ्यक्रमों में सीआईएमपी के साथ सहयोग करेगा। कार्यक्रम के दौरान सीआईएमपी के छात्र, संकाय सदस्य व अधिकारीगण, बीएसडीएमए के अधिकारीगण और मीडियाकर्मी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। डॉ. सिबानंद सेनापति ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

CIMP اور UNICEF کی طرف سے مشترکہ طور پر تیار کردہ DRR ای کورس کا آغاز

پٹنہ، 18 مارچ (اوم سنگھ)۔ بہار اسٹیٹ ڈیزاسٹر مینجمنٹ اتھارٹی (بی ایس ڈی ایم اے) کے وائس چیئرمین ڈاکٹر ادے کانت مشرا نے چندر گپتا انسٹی ٹیوٹ آف میں منعقدہ ایک پروگرام میں آفات کے خطرے میں کمی اور نوعمروں اور نوجوانوں کے لیے موسمیاتی تبدیلی کے نام سے ایک ای کورس شروع کیا۔ لانچنگ تقریب میں مہمان خصوصی ڈاکٹر مشرا کے علاوہ مہمانان خصوصی پروفیسر شرد کمار یادو، اعزازی وائس چانسلر، آریہ بھٹہ نالج یونیورسٹی، پٹنہ، محترمہ مارگریٹ گواڈا، سربراہ، یونیسیف بہار، ڈاکٹر رانا سنگھ، ڈائریکٹر، پروفیسر شرد کمار یادو تھے۔ سی آئی ایم پی، مسٹر کمود کمار، چیف ایڈمنسٹریٹو آفیسر، سی آئی ایم پی اور ڈاکٹر سیبا نند سینا پتی، سی آئی ایم پی موجود تھے۔ یہ نصاب یونیسیف اور مرکز برائے موسمیاتی لچک، آفات کے خطرے میں کمی، اور پانی کی صفائی اور حفظان صحت (WASH) ریسرچ اینڈ ایجوکیشن کی مشترکہ کوششوں سے تیار کیا گیا ہے۔ یہ مرکز CIMP سینٹر فار CSR اور ESG اسٹڈیز فاؤنڈیشن (CIMP فاؤنڈیشن) کے تحت ایک تحقیقی اور علمی مرکز کے طور پر تشکیل دیا گیا ہے۔ سی آئی ایم پی کے ڈائریکٹر ڈاکٹر رانا سنگھ نے تمام مہمانوں کا استقبال کیا۔ انہوں نے کہا کہ اس کورس کا مقصد نوعمروں اور نوجوانوں کی موسمیاتی تبدیلی، قدرتی آفات کے خطرات میں کمی اور پائیدار ترقی کے بارے میں صلاحیتوں کو بڑھانا ہے تاکہ ذمہ دار شہریوں کے طور پر بامعنی اقدامات کرنے میں ان کی مدد کی جا سکے۔ جناب راجیو کمار، پروگرام کے ماہر (خطرہ اور لچک)، یونیسیف بہار نے نصاب کا ایک مختصر تعارف پیش کیا اور آٹھ ماڈیولز کے بارے میں بتایا۔ انہوں نے مزید بتایا کہ اس کے وسیع استعمال کو مدنظر رکھتے ہوئے اس کورس کو عوام کے لیے قابل رسائی رکھا گیا ہے۔ کوئی بھی نوجوان، نوجوان یا عام شہری اسے مفت میں کر سکتا ہے۔ اپنے کلیدی خطاب میں، ڈاکٹر ادے کانت مشرا، نائب صدر، بی ایس ڈی ایم اے، نے آفات کے مختلف پہلوؤں پر روشنی ڈالی اور یہ بھی بتایا کہ نوجوان آفات کو کم کرنے میں کس طرح موثر کردار ادا کر سکتے ہیں۔ نوجوانوں میں تکنیکی مہارت، تنوع اور شمولیت، ماحولیاتی شعور، کاروباری جذبے اور سماجی بیداری جیسی مہارتوں کو سراہتے ہوئے انہوں نے امید ظاہر کی کہ وہ ڈیزاسٹر مینجمنٹ سے متعلق ذمہ داریوں کو موثر طریقے سے نبھائیں گے۔ اس تناظر میں، انہوں نے تیاری، آگاہی اور تعلیم، تربیت اور صلاحیت کی تعمیر، تعاون اور نیٹ ورکنگ، پسماندہ گروہوں کو بااختیار بنانا، ماحولیاتی انتظام، رضاکارانہ، کمیونٹی کی شمولیت، وکالت کے ذریعے پالیسیوں پر اثر انداز ہونے جیسی اہم ذمہ داریوں پر تفصیل سے بات کی۔ انہوں نے اس حقیقت پر بھی روشنی ڈالی کہ ریاستی حکومت کے "واٹر لائف گریزی مشن" نے دنیا بھر کی توجہ اپنی طرف مبذول کروائی اور بہار کے عزت مآب وزیر اعلیٰ نتیش کمار کو اقوام متحدہ کی "کلائمیٹ ایمبیشن گول میز" سے خطاب کے لیے مدعو کیا گیا۔ ہو گیا آخر میں، انہوں نے کہا کہ سیاسی عزم اور حکومتی فیصلوں میں نوجوانوں اور نوجوانوں کی فعال شرکت اور تعاون سے آفات کے خطرات میں کمی کو یقینی بنانے میں مدد ملے گی۔ یونیسیف بہار کی سربراہ محترمہ مارگریٹ گواڈا نے اپنے خطاب میں کہا کہ بہار میں تقریباً ہر سال ہر طرح کی آفات آتی ہیں۔ مزید برآں، بچے اور نوجوان دیگر عمر کے گروپوں کے مقابلے موسمیاتی تبدیلیوں سے سب سے زیادہ متاثر ہوتے ہیں۔ اس کے پیش نظر انہوں نے تمام اسٹیک ہولڈرز پر زور دیا کہ وہ ماحولیاتی تبدیلی کے اثرات کو کم کرنے کے لیے مل کر کام کریں۔ ای کورس کی تعریف کرتے ہوئے انہوں نے کہا کہ اس سے نوجوانوں اور نوجوانوں کو ریاست میں آفات اور موسمیاتی تبدیلی سے متعلق مسائل کے بارے میں ان کی سمجھ میں اضافہ کرنے میں مدد ملے گی۔ تازہ ترین معلومات سے لیس، نوعمروں اور نوجوانوں کی فوج موسمیاتی تبدیلی اور ڈیزاسٹر مینجمنٹ سے متعلق مسائل پر ریاست بھر میں بیداری پھیلانے کے لیے تبدیلی سازوں کے طور پر کام کرے گی۔ آریہ بھٹہ نالج یونیورسٹی کے وائس چانسلر پروفیسر شرد کمار یادو نے نوجوانوں پر زور دیا کہ وہ پوری سنجیدگی کے ساتھ اس کورس کو مکمل کریں۔ اس سے انہیں یہ سیکھنے میں مدد ملے گی کہ خطرے کا درست اندازہ کیسے لگایا جائے، لچک پیدا کی جائے اور کمیونٹی کو منظم کیا جائے۔

सीआईएमपी में यूनिसेफ का डीआरआर ई-कोर्स शुरू

■ जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास पर किशोर-किशोरियों का क्षमता वर्धन करना है पाठ्यक्रम का उद्देश्य

पटना (एंसएनबी)। चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआईएमपी) में आयोजित कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा द्वारा 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया। समारोह में डॉ. मिश्रा के अलावा सम्मानित अतिथि प्रोफेसर शरद कुमार यादव (कुलपति, आर्यभट्ट ज्ञान विश्वविद्यालय), मार्गेट ग्वाडा (प्रमुख, यूनिसेफ बिहार), डॉ. राणा सिंह (निदेशक, सीआईएमपी), कुमोद कुमार (मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, सीआईएमपी) एवं डॉ. सिबानंद सेनापति (सीआईएमपी) उपस्थित थे। यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वाटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआईएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है।

सीआईएमपी के निदेशक डॉ. राणा सिंह ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का क्षमता वर्धन करना है ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके। यूनिसेफ बिहार के कार्यक्रम विशेषज्ञ (रिस्क एंड रेजिलिएंस) राजीव कुमार ने पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए आठ मड्यूलों के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि इसके व्यापक उपयोग को ध्यान में रखते हुए कोर्स को लोक सुलभ रखा गया है। कोई भी किशोर-किशोरी, युवा या आम नागरिक इसे निःशुल्क कर सकते हैं। बीएसडीएमए के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा ने आपदा के विभिन्न पहलुओं को छुआ। उन्होंने युवाओं में तकनीकी दक्षता, समावेशिता, पर्यावरणीय चेतना, उद्यमशीलता और सामाजिकता जैसे कौशल की सराहना करते हुए कहा कि वे आपदा प्रबंधन से जुड़ी जिम्मेदारियों को प्रभावी ढंग से निभा सकते हैं।

Rashtriya Sahara ! Page No - 04 ! Date - 19-03-2024 !

सीआईएमपी पटना में डीआरआर ई-कोर्स का शुभारंभ

पटना (वि)। चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआईएमपी) में सोमवार को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा द्वारा 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-कोर्स का शुभारंभ किया गया। इस मौके पर सम्मानित अतिथि प्रोफेसर शरद कुमार यादव, कुलपति, आर्यभट्ट ज्ञान विवि, मार्ग्रेट ग्वाडा, प्रमुख, यूनिसेफ बिहार, डॉ. राणा सिंह, निदेशक, सीआईएमपी, कुमोद कुमार, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी एवं डॉ. सिबानंद सेनापति उपस्थित रहे। यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड ईएसजी स्टडीज फाउंडेशन के अंतर्गत अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है।

डीआरआर ई-कोर्स का हुआ शुभारंभ

पटना। चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान पटना (सीआइएमपी) और यूनिसेफ की ओर से विकसित डीआरआर इ-कोर्स शुरू किया गया। सोमवार को कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉ उदय कांत मिश्रा ने 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

लॉन्च समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर मिश्रा के साथ एकेयू के वीसी प्रो शरद कुमार यादव, यूनिसेफ बिहार प्रमुख मार्ग्रेट ग्वाडा, सीआईएमपी के निदेशक डॉ राणा सिंह, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कुमोद कुमार, एवं डॉ शिबानंद सेनापति उपस्थित रहे। यूनिसेफ बिहार के कार्यक्रम विशेषज्ञ राजीव कुमार ने पाठ्यक्रम का आठ मॉड्यूलों के बारे में बताया।

Hindustan !
Page No - 04 !
Date - 19-03-2024 !

सीआईएमपी व यूनिसेफ ने डीआरआर ई-कोर्स किया लॉन्च

एजुकेशन रिपोर्टर, पटना

चंद्रगुप्त प्रबंधन संस्थान पटना और यूनिसेफ की ओर से विकसित डीआरआर ई-कोर्स को सोमवार को लॉन्च किया गया। बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉ. उदय कांत मिश्रा ने 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक ई-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया। पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के बारे में बताना है।

यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सेनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है। इस सेंटर को सीआईएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड इएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआईएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है। इस मौके पर लॉन्च समारोह में मुख्य अतिथि डॉक्टर मिश्रा के साथ आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो शरद कुमार यादव, यूनिसेफ बिहार प्रमुख मारग्रेट ग्वाडा, सीआईएमपी के निदेशक डॉ राणा सिंह, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कुमोद कुमार एवं डॉ सिबानंद सेनापति उपस्थित रहे।

Dainik Bhaskar ! Page No - 04 ! Date - 19-03-2024 !

सीआइएमपी और यूनिसेफ ने डीआरआर इ-कोर्स किया लॉन्च

संवाददाता, पटना

चंद्रगुप्त प्रबंध संस्थान, पटना (सीआइएमपी) और यूनिसेफ की ओर से विकसित डीआरआर इ-कोर्स सोमवार को लॉन्च किया गया. कार्यक्रम में बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण (बीएसडीएमए) के उपाध्यक्ष डॉ उदयकांत मिश्रा ने 'डिजास्टर रिस्क रिडक्शन एंड क्लाइमेट चेंज फॉर एडोलेसेंट्स एंड यूथ' नामक इ-पाठ्यक्रम का शुभारंभ किया. लॉन्च समारोह में आर्यभट्ट नॉलेज यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो शरद कुमार यादव, यूनिसेफ़ बिहार प्रमुख मार्ग्रेट ग्वाडा, सीआइएमपी के निदेशक डॉ राणा सिंह, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कुमोद कुमार और डॉ सिबानंद सेनापति उपस्थित रहे.

पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन की जानकारी देना : यह पाठ्यक्रम यूनिसेफ और सेंटर फॉर क्लाइमेट रेसिलिएंस, डिजास्टर रिस्क रिडक्शन, एंड वॉटर सैनिटेशन एंड हाइजीन (वॉश) रिसर्च एंड एजुकेशन के संयुक्त प्रयास से तैयार किया गया है. इस सेंटर को सीआइएमपी सेंटर फॉर सीएसआर एंड इएसजी स्टडीज फाउंडेशन (सीआइएमपी फाउंडेशन) के अंतर्गत एक अनुसंधान और ज्ञान केंद्र के रूप में गठित किया गया है. सीआइएमपी के निदेशक डॉ राणा सिंह ने सभी अतिथियों का स्वागत किया. उन्होंने कहा कि इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य जलवायु परिवर्तन, आपदा जोखिम न्यूनीकरण व स्थायी विकास के ऊपर किशोर-किशोरियों और युवाओं का क्षमतावर्धन करना है, ताकि उन्हें बतौर जिम्मेदार नागरिक सार्थक कदम उठाने में मदद मिल सके.

Prbhat Khabar ! Page No - 07 !
Date - 19-03-2024 !